GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के साहित्य में सामाजिक सृजन

मुरली सिंह ठाकुर, डॉ. स्नेहलता निर्मलकर

शोधार्थी
पी-एच.डी (हिन्दी)
डॉ. सी.वी. रामन् करगीरोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सहायक प्राध्यापक
डॉ. सी.वी. रामन् करगीरोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

पण्डित द्वारिका प्रसाद तिवारी "विप्र" का साहित्य अजर-अमर है क्योंकि उनके साहित्य में युग जीवन की समस्याओं का निरूपण है। उस समय की सामाजिक समस्याए उनके साहित्य में लोक साहित्य की परम्परा के अनुरूप सहज, स्वभाविक ढंग से निर्दिष्ट हुई है। तात्पर्य यह है कि विप्र जी की रचनाओं में उस समय के वर्तमान सामाजिक समस्याओं को निरूपण करके सामाजिक जीवन की आवश्यकताओं के सहजता से दृष्टिगत किया है। युग विशेष की सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप चिन्तन की दिशा को मुड़ा जा सकता है। हिन्दी साहित्य का आदिकाल वीरगाधात्मक रचनाओं को प्रचुरता से युक्त है क्योंकि तत्कालिन समाज को वीरों की आवश्कता थी। देश और समाज की रक्षा के सामाने अपने जीवन को महत्व न देने की मानसिकता को विकसित करने का प्रयास करने उस युग के साहित्य और साहित्यकारों का दायित्व था।

प्रस्तावना:-

हिन्दी साहित्यकार सामाजिक प्राणी होने के कारण वह अपने परिवेश रीति-रिवाज, धर्म-कर्म, मानवीय व्यवहार आदि से साहित्य सृजन की प्रेरणा ग्रहण करते हुए साहित्य के माध्यम से प्रभावित होकर लक्ष्य तक पहुंचता है। साहित्य समाज को दिशानिर्देशन का काम करता है, और साहित्यकार को 'सहितस्य भाव' का तथ्य ही साहित्य को समाज के साथ गहरे रूप में आबध्द कर देता है। साहित्य की अपनी पहचान होती है। साहित्य वह सच्चा इतिहास है जो अपने समाज के साथ देशकाल एवं वातावरण का जैसा चित्रण होता है वैसा ही चित्रित करता है। जिनमें साहित्यकार की भूमिका समाजसुधार की भावना से प्रेरित होकर आदर्श की स्थापना करने की होती है। फलतः समाज उस चित्रण से प्रभावित होकर स्वचिंतन के लिए विवश हो जाता है। वाल्मीकी ने रामायण में आदर्श दृष्टिकोण से विभिन्न पहलुओं के चित्रण में बताया कि मानव समाज को कौनसा पथ संतोष और सुख की अनुभूति कराता है। हिन्दी साहित्य के माध्यम से समाज के उन्नति किया गया है। समाज पद्धति का मानव चेतना और मनुष्य के लोक व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है? क्योंकि साहित्य और समाज की पारस्पारिक क्रिया-प्रतिक्रिया का उपयोग समीक्षक की अपेक्षा इतिहासकार के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है।

19 वीं शदी में ही साहित्य और समाज के अंतरावलंबन को लेकर विवेचन सामने आया। पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' जी की रचना संसार विपुल है और यह विपुलता उनकी अनवरत साधना का प्रतिफल है। 'विप्र' की विशेषज्ञता का क्षेत्र व्यापकता एवं विविधता को समेटे हुए है।एक साथ मध्यकाल, भाषा-विज्ञान, काव्य-शास्त्र, प्रयोजनमूलक हिंदी, व्यवहारिक हिन्दी, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य, पत्रकारिता आदि में उनकी असाधारण गति एवं पकड़ लोगो को विस्मय विमुग्ध कर देती है, 'विप्र' जी ने जो कुछ भी लिखा है, पूरी आस्था के साथ लिखा है। किसी भी

https://www.gapbhasha.org/

युग की सांस्कृतिक अध्ययन जाति-धर्म, युग-धर्म, और सामाजिक प्रवृत्तियों के समीकृत अध्ययन से हो सकता है। जीवन को अधिक से अधिक सुखद बनाने के लिए मानव का सदैव से प्रयास रहा है। राजनीति, विज्ञान, धर्म, अर्थशास्त्र आदि सभी इस प्रयत्न में लगे रहते है, किन्तु इस दिशा में किए गए सारे प्रयत्न अपूर्ण रहे है और आंशिक रूप में भी सफल नहीं हो पाए है, क्योंकि मानव का मस्तिष्क प्रभावित होकर भी उसका हृदय अप्रभावित बना रहता है।

साहित्य कठिन-से-कठिन बात को सरलतम ढंग से प्रस्तुत करता है। अनादिकाल से ही साहित्य हमारे समाज का विभिन्न कोणों से चित्रण करता आया है। उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि साहित्यकार सामाजिक चेतना से अनुप्राणित रहता है। उसका दृष्टिकोन आदर्शवादी हो या यथार्थवादी हो उसके साहित्य में जहॉ एक ओर सांस्कृतिक यथार्थ को व्यंजित करने की तत्परता रहती है, वहीं पर समाज के वांछित विकास के लिए बेहतर विकल्प देने की अभिलाषा भी रहती है।

साहित्य और समाज का गहरा सम्बन्ध है। साथ ही साहित्य समुचे मानव समाज के जीवन की अभिव्यक्ति समझी जाती है। पण्डित द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' तथा उनके समकालीन छत्तीसढ़ के साहित्यकारों ने सामाजिक समस्याओं का चित्रांकन समाज सापेक्ष रूप में किया है। "विप्र" जी ने तो देश काल को समक्ष रख कर व्यक्ति व समष्टि की गहराईयों में प्रवेश कर अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी है। परिणामतः समाज का अंतरंग और बहिरंग स्वरूप स्पष्ट मुखरित हुआ है। समाज के सुधारवादी पक्ष की ओर आपका रूझान दिखाई देता है। सामाजिक समस्याओं से आम लोगों का परिचय कराते हुए उसे दूर करने स्वतुत्य प्रयास को 'विप्र' जी की साहित्यिक और व्यक्तिगत विशेषता कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं।

समाज की प्रमुख समस्या अशिक्षा की है, अशिक्षा के कारण समाज में कई तरह की बुराइया जन्म लेकर पनपाती है जो आगे चलकर समस्या का रूप धारण करती है। शिक्षा की कमी में समाज का सुधार एवं विकास सम्भव नहीं। इसलिए ही 'विप्र' जी अपने काव्य के माध्यम से गांव-गांव तक शिक्षा प्रचार करना चाहते है। इसके लिए वे गांव की गुड़ी में रामायण पाठ, दैनिक अखबार पठन एवं सार चीजों को अशिक्षित लोगों के बीच बताए जाने की अपील करते हैं। जो उनकी निम्न पक्तियों में देखी जा सकती है:-

"पोथी रमायेन गुड़ी मा बांचबोन, जमो जेवरिहा गाबो गा।
कथा सुनाके अड़हा मन के मन मा बुध उपजाबो गा।
गजट एक दु ठन मुगवाके पढ़-पढ़ के गोठियाबो गा।।

"गुड़ी" गांव में एक छायायुक्त झोपड़ी या कच्चा मकान जहाँ गांव के सभी लोग बैठकर गांव की समस्या पर चर्चा कर उसकी हल निकालते है। आज भी गांव में गुड़ी और चौपाल का विशेष महत्व है।

"विप्र" जी के समकालीन साहित्यकारों ने भी अलग-अलग ढंग से इस समस्या की ओर लोगों का ध्यानाकर्षण किया है। स्व. कोदूराम दलित जी ने "शिक्षा" की मनुष्य का गुरू और मित्र बता कर उसकी महत्ता प्रतिपादित किया है। दलित जी वे अनुसार सुन्दर रचना पढ़ने से व्यक्ति ज्ञानवान और शीलवान बन सकता है। जैसे -

"सुघ्घर पोथी नित पढ़ी, बनो सुशील सुजान।
ये पक्का गुरू आय अऊ सच्चा आय मितान।।

बबुलाल सिरीया "दुर्लभ" जी शिक्षा की अनिवार्यता की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कराते हुए गांव में पाठशाला कहॉ पर स्थित है। निम्न पंक्तियों में बताया है। साथ ही यह भी बताया है कि वहां बच्चों को नित्य प्रति प्रातःकाल जावर नये-नये गुण प्राप्त करना चाहिए। जैसे -

नरवा तिर जे धरसा हे,
तींहे नवा मदरसा हे,
रोज बिहिनिया जाबोन हम,
नवा-नवा गुन पाबोन हम।।

प्रायः ग्रामीण बालक पाठशाला जाने के नाम भयभीत रहा करते हैं। साथ ही अपने पिता से इस तथ्य का उद्घाटन

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

करते हुए भी देखा गया है कि वह अर्थात् ग्रामीण बालक खेत-खार, घर-द्वार आदि को छोड़कर मदरसा नहीं जा सकता।

मैं दादा गा कभ्भू मदरसा नई जावव।
खेत-खार, घर द्वार चिटिक नई भुलावव।।

समाज में व्याप्त अशिक्षा ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। जाति-पाति, छुआ-छूत, भेद-भाव आदि अशिक्षा के ही परिणाम है। इसका अस्तित्व नष्ट करने के लिए शिक्षा आवश्यक है और तब कहीं समाज का कल्याण हो सकता है। "विप्र" जो निम्नपक्तियों में यही कहना चाहते है:-

जात-पात के भेद ला टारौ,
छूआ-छूत ला अभी निकारौ,
त्ब होही कल्यान।।

विप्र जी के अनुसार छुआछूत, जात-पात, भेदभाव का मूल नष्ट करने पर ही समाज का कल्याण समाज का कल्याण सम्भव है। 'विप्र' जी के काव्य गुरू सरयू प्रसाद त्रिपाठी "मधुकर" जी जाति-पाति के समस्या से इतने पीड़ित है कि ईश्वर से ही प्रश्न कर उत्तर पाने के लिए प्रतित दिखाई देते है:-

क्यों रहते नहीं आपस में एक होकर हिन्दू मुसलमान।
इस जटिल समस्या का निदान देखे कब मिलता है भगवान।।

नारी का स्थान समाज में रीढ़ की हड्डी के समान है परन्तु समाज की एक महत्वपूर्ण बिन्दु होते हुए भी उनकी दशा दयनीय है। "विप्र" जी के कथा साहित्य में विभिन्न रूपों में उनकी समस्या को प्रकट किया है। कपिलनाथ कश्यप ने इस तथ्य को उजागर किया है कि अबला नारी को सबला होने में कोई देर नहीं केवल सामाजिक बंधनों को तोड़ने की देरी है, जैसे -

अबला नहीं नारी कतका सबला हे दिख जाही।
झूठा बन्धा टोर के जब नारी मन बाहिर आही।।

शोध का उद्देश्य:-

1. पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी के कृतित्व में छत्तीसगढ़ी भाषा साहित्य और साहित्य और सामाजिक चेतना का अध्ययन करना।
2. पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी के छत्तीसगढ़ी भाषा साहित्य में योगदान की समीक्षा करना।
3. पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी के छत्तीसगढ़ी भाषा साहित्य में भाव पक्ष एवं कलापक्ष का अध्ययन करना।
4. छत्तीसगढ़ी भाषा साहित्य के समकालिन लेखकों के साहित्य का अध्ययन करना।
5. पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी के छत्तीसगढ़ी भाषा साहित्य के अंतर्गत कविताओं एवं अन्य लेखों का अध्ययन करना।

https://www.gapbhasha.org/

उपसंहार:-

पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी विप्र ने अपने कथा साहित्य में सामाजिक समस्या को साहित्य में स्थान देकर युगीन संदर्भो के प्रति ईमानदारी का परिचय तो दिया ही है साथ ही एक साहित्यकार दे दायित्व का भी पूर्णतः निर्वाह किया। साहित्यकार का काम है अपनी भावनाओं को साहित्य के सहारे आम लोगों तक पहुंचाना है। जो कार्य विप्र के कथा साहित्य में पूरा समाज में व्याप्त सभी समस्याओं को उजाकर किया है। साथ ही साथ उन समस्याओं से दूर करने के प्रयास में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

[1] सिंह, (सुश्री) शरद. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास. पृष्ठ 15
[2] सं. तिवारी, नन्दकिशोर. छत्तीसगढ लोकाक्षर जनवरी-मार्च. 2008. पृष्ठ 27
[3] सं. शुक्ला, राजेश, ऋषिराज पाण्डेय. छत्तीसगढ़ समाज एवं संस्कृति. पृष्ठ 54
[4] सं. तिवारी, नन्दकिशोर. धमनी हाट. पृष्ठ 48
[5] सं. विश्वरंजन. कविता के पक्ष में. पृष्ठ 194
[6] सं. तिवारी, नन्दकिशोर. छत्तीसगढ़ लोकाक्षर. जनवरी-मार्च. 2008. पृष्ठ 154
[7] आड़िल, सत्यभामा. छत्तीसगसमाज एवं संस्कृति. पृष्ठ 64
[8] सं. तिवारी, नन्दकिशोर. छत्तीसगलोकाक्षर जनवरी-मार्च. 2008. पृष्ठ 229

https://www.gapbhasha.org/